IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.20591745

ISSN : 3048-6971

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्भव का इतिहास: स्थापना से संबंधित विवादों, मतों एवं सिद्धांतों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

Dr. Gautam Kumar
saharsa , Bihar
Email: gautamkumardu@gmail.com

सार (Abstract)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना आधुनिक भारत के राजनीतिक इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाती है, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास तथा स्वतंत्रता आंदोलन को संगठित दिशा प्रदान की। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक नीतियों के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में व्यापक असंतोष, राजनीतिक जागरूकता तथा राष्ट्रीय चेतना का विकास होने लगा। अंग्रेजी शिक्षा, आधुनिक प्रेस, संचार व्यवस्था तथा शिक्षित मध्यमवर्ग के उदय ने एक ऐसे अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन की आवश्यकता को जन्म दिया, जो भारतीय जनता की राजनीतिक आकांक्षाओं, प्रशासनिक सुधारों और अधिकारों की मांग को एक संगठित मंच प्रदान कर सके। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।

यह शोध आलेख भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्भव, स्थापना और उससे संबंधित विभिन्न विवादों, मतों एवं सिद्धांतों का ऐतिहासिक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कांग्रेस की स्थापना के पीछे कार्यरत परिस्थितियों, उद्देश्यों तथा विभिन्न इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत व्याख्याओं का आलोचनात्मक परीक्षण करना है। विशेष रूप से यह अध्ययन इस प्रश्न की पड़ताल करता है कि क्या कांग्रेस की स्थापना भारतीय राष्ट्रवाद की स्वाभाविक अभिव्यक्ति थी अथवा ब्रिटिश साम्राज्य की राजनीतिक रणनीति का परिणाम। इसी संदर्भ में कांग्रेस की स्थापना से संबंधित प्रमुख सिद्धांतों, विशेषकर "सेफ्टी वाल्व सिद्धांत", राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, मार्क्सवादी व्याख्या, कैम्ब्रिज स्कूल तथा औपनिवेशिक मतों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

इस अध्ययन में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों, इतिहासकारों की व्याख्याओं, शोध ग्रंथों तथा संबंधित ऐतिहासिक दस्तावेजों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म किसी एक कारण का परिणाम नहीं था, बल्कि औपनिवेशिक शोषण, सामाजिक-राजनीतिक चेतना, शिक्षित वर्ग की आकांक्षाओं तथा प्रशासनिक परिस्थितियों के संयुक्त प्रभाव से संभव हुआ। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि कांग्रेस की स्थापना को केवल ब्रिटिश नीति अथवा केवल भारतीय राष्ट्रवाद की स्वाभाविक अभिव्यक्ति मानना एकांगी दृष्टिकोण होगा; बल्कि इसके उद्भव को बहुआयामी ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

मुख्य शब्द (Keywords): - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय राष्ट्रवाद, कांग्रेस की स्थापना, सेफ्टी वाल्व सिद्धांत, औपनिवेशिक भारत, राजनीतिक चेतना, ए.ओ. ह्यूम, लॉर्ड डफरिन, राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, मार्क्सवादी व्याख्या, कैम्ब्रिज स्कूल, इतिहासलेखन, राष्ट्रीय आंदोलन, उदारवादी राजनीति, औपनिवेशिक शासन।

भूमिका (Introduction)

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध का भारत राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा था। ब्रिटिश शासन की नीतियों ने भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला। पारंपरिक उद्योगों के पतन, कृषि पर बढ़ते करों, अकाल, बेरोज़गारी तथा आर्थिक संसाधनों के निरंतर दोहन के कारण जनता में असंतोष बढ़ने लगा। शिक्षित भारतीय वर्ग के बीच यह भावना मजबूत होने लगी कि देश की समस्याओं के समाधान और जनता की आवाज़ को शासन तक पहुँचाने के लिए एक संगठित राजनीतिक मंच की आवश्यकता है। यद्यपि इस समय तक विभिन्न क्षेत्रों में छोटे स्तर पर विरोध और सामाजिक सुधार आंदोलनों की शुरुआत हो चुकी थी, फिर भी राष्ट्रीय स्तर पर कोई ऐसा संगठन नहीं था जो भारतीयों की सामूहिक राजनीतिक आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व कर सके।

वैचारिक चेतना को जन्म दिया। पश्चिमी शिक्षा प्राप्त भारतीयों ने स्वतंत्रता, समानता, अधिकार, प्रतिनिधि शासन और संवैधानिक व्यवस्था जैसे विचारों को समझना प्रारंभ किया। शिक्षित वर्ग ने ब्रिटिश प्रशासन की नीतियों का मूल्यांकन करना शुरू किया और शासन में भारतीय भागीदारी की मांग को उचित माना। विश्वविद्यालयों की स्थापना तथा नए शिक्षित मध्यम वर्ग के उदय ने राजनीतिक चर्चा और विचार-विमर्श को गति दी। यह वर्ग धीरे-धीरे सार्वजनिक जीवन में सक्रिय होकर राजनीतिक संगठनों के निर्माण की ओर उन्मुख हुआ।

अंग्रेजी में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं ने राजनीतिक जागरूकता फैलाने, प्रशासनिक कमियों को उजागर करने तथा जनता के विचारों को व्यक्त करने का कार्य किया। प्रेस ने विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया और राष्ट्रीय चेतना के विकास में सहयोग दिया। इससे लोगों में राजनीतिक घटनाओं के प्रति रुचि बढ़ी और शासन संबंधी मुद्दों पर विचार करने की प्रवृत्ति विकसित हुआ।

हुआ, जिन्होंने राजनीतिक संगठन निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार की। पूना सार्वजनिक सभा, इंडियन एसोसिएशन, बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन तथा मद्रास महाजन सभा जैसे संगठनों ने प्रशासनिक सुधार, प्रतिनिधित्व और भारतीय अधिकारों से जुड़े प्रश्न उठाए। इन संस्थाओं की गतिविधियों ने अखिल भारतीय स्तर पर एक व्यापक राजनीतिक संगठन की आवश्यकता को स्पष्ट किया। इसी ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक वातावरण में 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उदय हुआ, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद को संगठित स्वरूप प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्भव, स्वरूप और स्थापना संबंधी उद्देश्यों को लेकर विभिन्न इतिहासकारों ने अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। इन व्याख्याओं ने कांग्रेस की स्थापना और उसके ऐतिहासिक महत्व को समझने के लिए विविध बौद्धिक आधार प्रदान किए हैं।

Bipan Chandra ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भारतीय राष्ट्रवाद की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के रूप में देखा है। उनके अनुसार कांग्रेस का उदय भारतीय समाज में बढ़ती राजनीतिक चेतना, औपनिवेशिक शोषण के प्रति प्रतिक्रिया तथा शिक्षित भारतीय वर्ग की राजनीतिक आकांक्षाओं का परिणाम था। वे इसे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के वैचारिक और संगठनात्मक विकास की महत्वपूर्ण कड़ी मानते हैं।

Sumit Sarkar ने कांग्रेस के उद्भव का अध्ययन सामाजिक और औपनिवेशिक संदर्भों में किया है। उनके अनुसार कांग्रेस केवल राजनीतिक संस्था नहीं थी, बल्कि यह उस समय के सामाजिक परिवर्तनों, शिक्षित मध्यमवर्ग के उदय तथा औपनिवेशिक प्रशासनिक नीतियों की प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुई।

R. C. Majumdar ने कांग्रेस की स्थापना और उसके प्रारंभिक उद्देश्यों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनका मत है कि प्रारंभिक कांग्रेस नेतृत्व सीमित राजनीतिक सुधारों और संवैधानिक मांगों तक केंद्रित था तथा उसका प्रभाव तत्काल व्यापक जनसमूह तक नहीं पहुँचा।

Anil Seal ने कैम्ब्रिज स्कूल की दृष्टि से कांग्रेस को स्थानीय अभिजात वर्ग और सत्ता-संतुलन की राजनीति से जोड़कर देखा। दूसरी ओर A. R. Desai ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए कांग्रेस के उद्भव को शिक्षित मध्यमवर्ग और वर्गीय हितों से संबंधित प्रक्रिया माना। इन सभी इतिहासकारों की व्याख्याएँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्भव को बहुआयामी ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में समझने में सहायक सिद्ध होती हैं।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्भव की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्भव अचानक घटित घटना नहीं था, बल्कि यह उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा वैचारिक परिवर्तनों की लंबी प्रक्रिया का परिणाम था। विशेष रूप से 1857 के विद्रोह के बाद की परिस्थितियों, अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार, नए शिक्षित मध्यवर्ग के उदय, सामाजिक एवं राजनीतिक जागरण तथा प्रारंभिक राजनीतिक संस्थाओं की सक्रियता ने कांग्रेस की स्थापना के लिए अनुकूल आधार तैयार किया।

1857 के बाद भारत की स्थिति

1857 के विद्रोह के बाद भारत में ब्रिटिश शासन की प्रकृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। 1858 में शासन का नियंत्रण सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन चला गया, जिससे प्रशासन अधिक केंद्रीकृत और संगठित हुआ। ब्रिटिश सरकार ने एक ओर प्रशासनिक सुधारों की घोषणा की, वहीं दूसरी ओर भारतीय जनता पर राजनीतिक नियंत्रण को मजबूत किया। सेना का पुनर्गठन, प्रशासन में यूरोपीय प्रभाव की वृद्धि तथा भारतीयों को उच्च प्रशासनिक पदों से सीमित रूप से दूर रखना इस काल की प्रमुख विशेषताएँ थीं। आर्थिक स्तर पर करों का बोझ, कृषि संकट, अकाल और पारंपरिक उद्योगों के पतन ने जनता के असंतोष को बढ़ाया। इन परिस्थितियों ने शिक्षित भारतीयों में राजनीतिक जागरूकता और अधिकारों की मांग को जन्म दिया।

सामाजिक एवं राजनीतिक जागरण

उन्नीसवीं शताब्दी में सामाजिक सुधार आंदोलनों और आधुनिक विचारों के प्रभाव से भारतीय समाज में नई चेतना विकसित हुई। सामाजिक कुरीतियों, शिक्षा, महिला अधिकारों और सामाजिक सुधारों पर विचार-विमर्श बढ़ा। साथ ही प्रेस और समाचार पत्रों ने जनता को राजनीतिक घटनाओं से अवगत कराया तथा शासन की नीतियों की आलोचना को सार्वजनिक मंच प्रदान किया। इससे लोगों में राष्ट्रीय भावना और राजनीतिक भागीदारी की इच्छा बढ़ने लगी। विभिन्न क्षेत्रों के शिक्षित भारतीयों ने यह महसूस किया कि देश के हितों की रक्षा के लिए एक साझा राजनीतिक मंच आवश्यक है।

अंग्रेजी शिक्षा और मध्यवर्ग का विकास

अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार ने भारतीय समाज में नए शिक्षित मध्यवर्ग के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और आधुनिक शिक्षा संस्थानों से शिक्षित भारतीयों ने यूरोप के लोकतांत्रिक विचारों, संवैधानिक शासन, नागरिक अधिकारों और प्रतिनिधिक संस्थाओं के सिद्धांतों को समझा। इस वर्ग में वकील, शिक्षक, पत्रकार, डॉक्टर और प्रशासनिक सेवाओं से जुड़े लोग शामिल थे। यही वर्ग आगे चलकर राजनीतिक गतिविधियों का नेतृत्वकर्ता बना तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक नेतृत्व में प्रमुख भूमिका निभाई।

प्रारंभिक राजनीतिक संस्थाएँ

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से पहले कई क्षेत्रीय राजनीतिक संगठनों ने राजनीतिक चेतना को संगठित करने का प्रयास किया। इनमें पूना सार्वजनिक सभा, इंडियन एसोसिएशन, बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन तथा मद्रास महाजन सभा प्रमुख थीं। इन संस्थाओं ने प्रशासनिक सुधार, सरकारी सेवाओं में भारतीयों की भागीदारी, करों में राहत तथा प्रतिनिधित्व संबंधी मांगों को उठाया। यद्यपि इनका प्रभाव क्षेत्रीय स्तर तक सीमित था, फिर भी इन्होंने अखिल

भारतीय राजनीतिक संगठन की आवश्यकता को स्पष्ट किया। इसी पृष्ठभूमि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई, जिसने राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक एकता और राष्ट्रवादी चेतना को संगठित स्वरूप प्रदान किया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना वर्ष 1885 में आधुनिक भारत के राजनीतिक इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में हुई। यह संस्था ऐसे समय में अस्तित्व में आई जब भारत में शिक्षित वर्ग राजनीतिक अधिकारों, प्रशासनिक सुधारों तथा शासन में भारतीय भागीदारी की मांग को अधिक संगठित रूप में व्यक्त करना चाहता था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बढ़ती राजनीतिक चेतना, अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव, प्रेस की सक्रियता तथा क्षेत्रीय राजनीतिक संस्थाओं के उदय ने एक अखिल भारतीय संगठन की आवश्यकता को स्पष्ट कर दिया था। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।

प्रथम अधिवेशन का आयोजन

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 28 दिसंबर 1885 को बंबई (वर्तमान मुंबई) स्थित गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में आयोजित किया गया। प्रारंभिक योजना के अनुसार यह अधिवेशन पुणे में होना था, किंतु स्वास्थ्य संबंधी परिस्थितियों के कारण इसे बंबई स्थानांतरित कर दिया गया। इस अधिवेशन में भारत के विभिन्न भागों से कुल 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अधिवेशन की अध्यक्षता व्योमेश चंद्र बनर्जी (डब्ल्यू.सी. बनर्जी) ने की, जबकि ए.ओ. ह्यूम ने इसके आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाई। प्रतिभागियों में वकील, शिक्षक, पत्रकार तथा शिक्षित मध्यमवर्ग के प्रतिनिधि प्रमुख रूप से सम्मिलित थे, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक कांग्रेस शिक्षित वर्ग की राजनीतिक आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती थी।

स्थापना के उद्देश्य

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का मूल उद्देश्य भारतीयों को एक साझा राजनीतिक मंच प्रदान करना था, जिसके माध्यम से वे अपनी समस्याओं, मांगों तथा विचारों को संगठित ढंग से सरकार के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। कांग्रेस का उद्देश्य प्रशासनिक सुधारों की मांग करना, सरकारी सेवाओं में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाना, विधायी परिषदों का विस्तार, करों के बोझ को कम करना तथा शासन में उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना था। साथ ही विभिन्न प्रांतों, भाषाओं और समुदायों के लोगों में राजनीतिक एकता और राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा देना भी इसका एक प्रमुख उद्देश्य था।

प्रारंभिक नेतृत्व और स्वरूप

कांग्रेस के प्रारंभिक नेतृत्व में शिक्षित, उदारवादी तथा संवैधानिक सुधारों में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी तथा आनंद मोहन बोस जैसे नेताओं ने संगठन को वैचारिक दिशा प्रदान की। प्रारंभिक कांग्रेस नेतृत्व ब्रिटिश शासन के पूर्ण विरोध के बजाय प्रशासनिक सुधारों और संवैधानिक उपायों के माध्यम से भारतीय हितों की रक्षा में विश्वास करता था। यह नेतृत्व याचिकाओं, प्रार्थना-पत्रों और संवाद की नीति को अपनाता था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रारंभिक चरित्र

प्रारंभिक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का चरित्र उदारवादी, संवैधानिक तथा शिक्षित मध्यवर्गीय था। इसके नेता ब्रिटिश शासन के भीतर रहकर सुधारों और भारतीय प्रतिनिधित्व की मांग करते थे। कांग्रेस ने जाति, धर्म और क्षेत्रीय भेदभाव से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करने का प्रयास किया। यद्यपि प्रारंभिक चरण में इसका प्रभाव सीमित शिक्षित वर्ग तक केंद्रित था, फिर भी इसने भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय स्तर पर संवाद, संगठन और

राजनीतिक चेतना के विकास की मजबूत आधारभूमि तैयार की। आगे चलकर यही संस्था भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख वाहक बनी।

कांग्रेस स्थापना से संबंधित विवाद एवं सिद्धांत

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना को लेकर इतिहासकारों, राजनीतिक विचारकों तथा शोधकर्ताओं के बीच लंबे समय से मतभेद विद्यमान हैं। कांग्रेस के उद्भव को केवल एक घटना के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि इसके पीछे कार्यरत राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक तथा वैचारिक कारणों को लेकर अनेक सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं। कुछ इतिहासकार कांग्रेस को भारतीय राष्ट्रवाद की स्वाभाविक अभिव्यक्ति मानते हैं, जबकि कुछ इसे ब्रिटिश शासन की राजनीतिक रणनीति का परिणाम बताते हैं। इसी कारण कांग्रेस की स्थापना से संबंधित विवाद इतिहासलेखन का एक महत्त्वपूर्ण विषय बन गया है।

सेफ्टी वाल्व सिद्धांत (Safety Valve Theory)

कांग्रेस की स्थापना से संबंधित सबसे चर्चित सिद्धांत "सेफ्टी वाल्व सिद्धांत" है। इस सिद्धांत के अनुसार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य भारतीय जनता में बढ़ते असंतोष और संभावित विद्रोह को नियंत्रित करना था। इस मत के अनुसार ब्रिटिश सरकार, विशेष रूप से तत्कालीन वायसराय लॉर्ड डफरिन, यह समझ चुके थे कि औपनिवेशिक नीतियों, आर्थिक शोषण और प्रशासनिक असमानताओं के कारण भारतीय समाज में असंतोष बढ़ रहा है। यदि इस असंतोष को अभिव्यक्ति का अवसर नहीं दिया गया, तो यह भविष्य में बड़े विद्रोह का रूप ले सकता था।

इस सिद्धांत के अंतर्गत ए.ओ. ह्यूम की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। कहा जाता है कि अवकाशप्राप्त भारतीय सिविल सेवा अधिकारी एलन ऑक्टेवियन ह्यूम ने भारतीय शिक्षित वर्ग को एक राजनीतिक मंच पर संगठित करने का प्रयास किया ताकि असंतोष को शांतिपूर्ण और नियंत्रित माध्यम से व्यक्त किया जा सके। इस दृष्टिकोण के अनुसार कांग्रेस एक "सुरक्षा वाल्व" के रूप में कार्य करती थी, जिसके माध्यम से भारतीय जनता का असंतोष बिना किसी हिंसक विस्फोट के व्यक्त हो सके।

इस विचार को प्रमुख रूप से लाला लाजपत राय ने अपनी पुस्तक *Young India* में प्रस्तुत किया। उन्होंने कांग्रेस को ब्रिटिश साम्राज्य के हितों की रक्षा करने वाला माध्यम बताया। हालांकि, इस सिद्धांत की आलोचना भी व्यापक रूप से हुई है। अनेक इतिहासकारों का मत है कि कांग्रेस की स्थापना केवल ब्रिटिश प्रशासन की योजना नहीं थी, बल्कि भारतीय समाज में बढ़ती राजनीतिक चेतना और संगठित नेतृत्व की वास्तविक आवश्यकता का परिणाम भी थी। आलोचकों के अनुसार यदि कांग्रेस केवल ब्रिटिश हितों की संस्था होती, तो वह आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख मंच नहीं बन पाती।

राष्ट्रवादी सिद्धांत

राष्ट्रवादी इतिहासकार कांग्रेस की स्थापना को भारतीय राष्ट्रवाद की स्वाभाविक और ऐतिहासिक अभिव्यक्ति मानते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार कांग्रेस का उद्भव भारतीय समाज में विकसित हो रही राजनीतिक चेतना, आर्थिक शोषण के प्रति असंतोष तथा राष्ट्रीय एकता की बढ़ती भावना का परिणाम था। अंग्रेजी शिक्षा, आधुनिक प्रेस, संचार के साधनों और शिक्षित मध्यमवर्ग के विस्तार ने भारतीयों में राजनीतिक अधिकारों और प्रतिनिधित्व की मांग को मजबूत किया।

राष्ट्रवादी विचारकों का मत है कि कांग्रेस भारतीय जनता की राजनीतिक आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था थी। इस दृष्टिकोण में ए.ओ. ह्यूम को केवल एक संगठक या सहायक के रूप में देखा जाता है, जबकि

वास्तविक प्रेरणा भारतीय शिक्षित वर्ग और राष्ट्रवादी चेतना से उत्पन्न हुई थी। इस सिद्धांत के अनुसार कांग्रेस भारतीयों को राजनीतिक रूप से संगठित करने और राष्ट्रीय आंदोलन को दिशा देने का प्रारंभिक मंच बनी।

मार्क्सवादी व्याख्या

मार्क्सवादी इतिहासकार कांग्रेस की स्थापना को वर्गीय हितों के संदर्भ में समझने का प्रयास करते हैं। उनके अनुसार कांग्रेस का प्रारंभिक नेतृत्व मुख्यतः शिक्षित मध्यमवर्ग, पेशेवर वर्ग तथा उभरते भारतीय पूंजीपति वर्ग से संबंधित था। इस कारण कांग्रेस की प्रारंभिक मांगें व्यापक जनसंघर्ष के बजाय प्रशासनिक सुधारों और राजनीतिक प्रतिनिधित्व तक सीमित थीं।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण यह मानता है कि कांग्रेस का प्रारंभिक स्वरूप जनसामान्य के संघर्ष का प्रतिनिधि नहीं था, बल्कि शिक्षित वर्ग की आर्थिक और राजनीतिक आकांक्षाओं का मंच था। हालांकि, समय के साथ कांग्रेस ने व्यापक जनभागीदारी को अपनाया और राष्ट्रीय आंदोलन का प्रमुख संगठन बनी।

कैम्ब्रिज स्कूल सिद्धांत

कैम्ब्रिज स्कूल के इतिहासकार कांग्रेस की स्थापना को स्थानीय अभिजात वर्ग, क्षेत्रीय नेतृत्व और सत्ता-संतुलन की राजनीति से जोड़कर देखते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार भारतीय राजनीति का विकास केवल राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित नहीं था, बल्कि स्थानीय हितों, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और प्रशासनिक अवसरों से भी प्रभावित था।

इस मत के अनुसार कांग्रेस विभिन्न प्रांतीय नेताओं और शिक्षित अभिजात वर्ग के लिए राजनीतिक प्रभाव स्थापित करने का माध्यम बनी। इतिहासकारों का तर्क है कि राष्ट्रीय आंदोलन को केवल आदर्शवादी राष्ट्रवाद के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है; उसके पीछे सामाजिक शक्ति-संतुलन और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को भी समझना आवश्यक है।

औपनिवेशिक दृष्टिकोण

औपनिवेशिक दृष्टिकोण कांग्रेस की स्थापना को ब्रिटिश प्रशासन की राजनीतिक नीति के संदर्भ में देखता है। इस मत के अनुसार कांग्रेस को एक नियंत्रित राजनीतिक मंच के रूप में विकसित होने दिया गया, ताकि भारतीय शिक्षित वर्ग की मांगों को सीमित दायरे में रखा जा सके और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापक विद्रोह को रोका जा सके।

इतिहासकारों के मतों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना को लेकर इतिहासकारों ने अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। इन मतों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि कांग्रेस का उद्भव एक जटिल ऐतिहासिक प्रक्रिया थी, जिसे केवल एक कारण अथवा एक सिद्धांत के आधार पर नहीं समझा जा सकता। राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, औपनिवेशिक तथा कैम्ब्रिज स्कूल के इतिहासकारों ने कांग्रेस की स्थापना के उद्देश्य, स्वरूप और ऐतिहासिक भूमिका को अलग-अलग दृष्टि से व्याख्यायित किया है।

राष्ट्रवादी इतिहासकारों, विशेषकर बिपिन चंद्र, का मत है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्भव भारतीय राष्ट्रवाद की स्वाभाविक अभिव्यक्ति था। उनके अनुसार उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंग्रेजी शिक्षा, आधुनिक प्रेस, आर्थिक शोषण तथा शिक्षित मध्यवर्ग की राजनीतिक चेतना ने राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता उत्पन्न की। यह दृष्टिकोण कांग्रेस को भारतीय जनता की राजनीतिक आकांक्षाओं का प्रतिनिधि मानता है और इसकी स्थापना को राष्ट्रीय जागरण की ऐतिहासिक परिणति के रूप में प्रस्तुत करता है।

इसके विपरीत सेफ्टी वाल्व सिद्धांत के समर्थक यह तर्क देते हैं कि कांग्रेस की स्थापना ब्रिटिश शासन की राजनीतिक रणनीति का हिस्सा थी। इस मत के अनुसार ए.ओ. ह्यूम और तत्कालीन वायसराय लॉर्ड डफरिन ने भारतीय असंतोष को नियंत्रित करने के लिए कांग्रेस को एक नियंत्रित मंच के रूप में विकसित किया। लाला लाजपत राय ने इस विचार को प्रमुखता देते हुए कांग्रेस को ब्रिटिश शासन के लिए "सुरक्षा वाल्व" की संज्ञा दी। हालांकि इस दृष्टिकोण की

आलोचना यह कहकर की जाती है कि यदि कांग्रेस केवल औपनिवेशिक हितों का साधन होती, तो वह आगे चलकर व्यापक स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व नहीं कर पाती।

मार्क्सवादी इतिहासकार कांग्रेस की स्थापना को वर्गीय हितों से जोड़कर देखते हैं। उनके अनुसार कांग्रेस का प्रारंभिक नेतृत्व शिक्षित मध्यमवर्ग, वकीलों, व्यापारिक समूहों और पेशेवर वर्ग से जुड़ा था, इसलिए इसकी प्रारंभिक मांगें जनसामान्य की क्रांतिकारी समस्याओं के बजाय प्रशासनिक सुधारों और राजनीतिक प्रतिनिधित्व तक सीमित थीं। वहीं कैम्ब्रिज स्कूल के इतिहासकार कांग्रेस के उद्भव को स्थानीय अभिजात वर्ग, क्षेत्रीय नेतृत्व तथा सत्ता-संतुलन की राजनीति से जोड़ते हैं। उनके अनुसार राष्ट्रीय राजनीति का विकास केवल राष्ट्रवादी भावना का परिणाम नहीं था, बल्कि स्थानीय राजनीतिक प्रतिस्पर्धाओं का भी प्रभाव उसमें दिखाई देता है।

इन सभी दृष्टिकोणों में कुछ समानताएँ और भिन्नताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। लगभग सभी इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय समाज में राजनीतिक परिवर्तन और शिक्षित वर्ग की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी। किंतु मतभेद इस प्रश्न पर उभरते हैं कि कांग्रेस की स्थापना का वास्तविक प्रेरक तत्व क्या था—भारतीय राष्ट्रवाद, औपनिवेशिक रणनीति, वर्गीय हित या स्थानीय राजनीतिक शक्ति-संतुलन। राष्ट्रवादी इतिहासकार कांग्रेस को जन-आकांक्षाओं का प्रतिनिधि मानते हैं, जबकि मार्क्सवादी और कैम्ब्रिज स्कूल इसकी सामाजिक संरचना और नेतृत्व की सीमाओं को रेखांकित करते हैं।

ऐतिहासिक प्रमाणों के मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि कांग्रेस की स्थापना के पीछे किसी एक कारण को निर्णायक नहीं माना जा सकता। ए.ओ. ह्यूम की भूमिका, लॉर्ड डफरिन के साथ उनके संबंध, कांग्रेस के प्रारंभिक प्रस्ताव, शिक्षित वर्ग की सक्रियता, क्षेत्रीय राजनीतिक संस्थाओं का विकास तथा भारतीय समाज में बढ़ती राजनीतिक चेतना—ये सभी तथ्य इस प्रक्रिया को बहुआयामी बनाते हैं। इसलिए आलोचनात्मक दृष्टि से यह निष्कर्ष अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्भव न तो केवल ब्रिटिश शासन की नीति का परिणाम था और न ही केवल राष्ट्रवादी भावना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति; बल्कि यह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और औपनिवेशिक परिस्थितियों की संयुक्त ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम था।

भारतीय राष्ट्रवाद और कांग्रेस का प्रारंभिक योगदान

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना आधुनिक भारत के राष्ट्रवादी इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। यद्यपि अपने प्रारंभिक चरण में कांग्रेस का स्वरूप सीमित और उदारवादी था, फिर भी इस संस्था ने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास, राजनीतिक चेतना के विस्तार तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने में उल्लेखनीय योगदान दिया। कांग्रेस ने विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं, धर्मों और सामाजिक समूहों के शिक्षित भारतीयों को एक साझा मंच प्रदान किया, जिसके माध्यम से वे अपने राजनीतिक अधिकारों और प्रशासनिक सुधारों की मांग को संगठित रूप से प्रस्तुत कर सके।

राजनीतिक चेतना का विस्तार

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रारंभिक योगदान भारतीयों में राजनीतिक चेतना का विकास करना था। कांग्रेस ने जनता को शासन, प्रशासन, अधिकारों और प्रतिनिधित्व जैसे प्रश्नों से परिचित कराया। इसके वार्षिक अधिवेशनों, प्रस्तावों, विचार-विमर्शों तथा सार्वजनिक बैठकों ने शिक्षित वर्ग के बीच राजनीतिक समझ विकसित की। कांग्रेस नेताओं ने संवैधानिक अधिकारों, विधायी परिषदों में भारतीय प्रतिनिधित्व, प्रशासनिक सुधार तथा सरकारी सेवाओं में भारतीयों की भागीदारी जैसे विषयों को प्रमुखता से उठाया।

कांग्रेस ने समाचार पत्रों, भाषणों और जनसंपर्क के माध्यम से यह विचार प्रसारित किया कि भारतीयों को अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए। इससे धीरे-धीरे जनता में यह समझ विकसित हुई कि राष्ट्रीय

समस्याओं के समाधान के लिए संगठित राजनीतिक प्रयास आवश्यक हैं। इस प्रकार कांग्रेस ने राजनीतिक शिक्षा और जनमत निर्माण की प्रक्रिया को गति प्रदान की।

राष्ट्रीय एकता की भावना

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एक महत्वपूर्ण योगदान राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करना था। उस समय भारत विभिन्न जातीय, धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय विभाजनों से प्रभावित था। कांग्रेस ने इन सीमाओं से ऊपर उठकर भारतीयों को एक साझा राष्ट्रीय पहचान के अंतर्गत संगठित करने का प्रयास किया। इसके अधिवेशनों में देश के विभिन्न भागों से प्रतिनिधियों की भागीदारी ने अखिल भारतीय राजनीतिक चेतना को बढ़ावा दिया।

कांग्रेस नेताओं ने जाति, धर्म और प्रांत के आधार पर विभाजन के बजाय सहयोग, समानता और राष्ट्रीय हित पर बल दिया। इस प्रक्रिया ने भारतीयों के बीच यह भावना विकसित की कि वे एक साझा राजनीतिक समुदाय का हिस्सा हैं और उनके हित भी समान हैं। इसी कारण कांग्रेस को भारतीय राष्ट्रवाद की प्रारंभिक संगठित अभिव्यक्ति माना जाता है।

प्रारंभिक सीमाएँ

हालाँकि कांग्रेस का प्रारंभिक योगदान महत्वपूर्ण था, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। प्रारंभिक कांग्रेस मुख्यतः शिक्षित मध्यमवर्ग, वकीलों, पत्रकारों और उच्च सामाजिक वर्गों तक सीमित थी। किसानों, मजदूरों, महिलाओं और निम्न वर्गों की भागीदारी अपेक्षाकृत कम थी। इसके अतिरिक्त कांग्रेस के प्रारंभिक नेताओं ने ब्रिटिश शासन का पूर्ण विरोध करने के बजाय संवैधानिक सुधारों और याचिकाओं की नीति अपनाई, जिससे इसकी गतिविधियाँ सीमित दायरे में रहीं।

कांग्रेस की मांगें भी प्रारंभिक दौर में प्रशासनिक सुधारों, प्रतिनिधित्व और सेवाओं में भागीदारी तक सीमित थीं, न कि पूर्ण स्वतंत्रता की मांग तक। इसके बावजूद यह स्वीकार करना आवश्यक है कि कांग्रेस ने भारतीय राजनीति को संगठित स्वरूप देने, राष्ट्रवादी चेतना विकसित करने तथा आगे चलकर व्यापक स्वतंत्रता आंदोलन की आधारभूमि तैयार करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्भव आधुनिक भारत के राजनीतिक इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास तथा स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा निर्धारित करने में केंद्रीय भूमिका निभाई। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कांग्रेस की स्थापना किसी आकस्मिक घटना का परिणाम नहीं थी, बल्कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में विकसित हो रही राजनीतिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन, औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों तथा शिक्षित मध्यवर्ग की बढ़ती आकांक्षाओं का परिणाम थी। अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार, आधुनिक प्रेस के विकास, प्रारंभिक राजनीतिक संस्थाओं की सक्रियता और प्रशासनिक असंतोष ने ऐसे वातावरण का निर्माण किया, जिसमें एक अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी।

कांग्रेस की स्थापना से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों और इतिहासकारों के मतों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक दृष्टिकोण इस ऐतिहासिक प्रक्रिया के एक विशिष्ट पक्ष को सामने लाता है। सेफ्टी वाल्व सिद्धांत कांग्रेस की स्थापना को ब्रिटिश प्रशासन की रणनीति के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसके अनुसार भारतीय असंतोष को नियंत्रित करने के उद्देश्य से एक राजनीतिक मंच उपलब्ध कराया गया। दूसरी ओर राष्ट्रवादी दृष्टिकोण कांग्रेस को भारतीय राजनीतिक चेतना और राष्ट्रीय आकांक्षाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति मानता है। मार्क्सवादी व्याख्या कांग्रेस के प्रारंभिक नेतृत्व और उसके वर्गीय चरित्र पर बल देती है, जबकि कैम्ब्रिज स्कूल स्थानीय अभिजात वर्ग और सत्ता-

संतुलन की राजनीति को महत्त्वपूर्ण मानता है। औपनिवेशिक दृष्टिकोण प्रशासनिक नियंत्रण और राजनीतिक प्रबंधन की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

इन सिद्धांतों का संतुलित मूल्यांकन यह संकेत देता है कि कांग्रेस के उद्भव को किसी एक कारण या दृष्टिकोण तक सीमित करना ऐतिहासिक रूप से उचित नहीं होगा। यदि केवल सेफ्टी वाल्व सिद्धांत को स्वीकार किया जाए, तो भारतीय समाज में विकसित राष्ट्रवादी चेतना की उपेक्षा होगी, और यदि केवल राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को निर्णायक माना जाए, तो औपनिवेशिक प्रशासन की राजनीतिक रणनीतियों को नज़रअंदाज़ करना पड़ेगा। इसी प्रकार वर्गीय तथा क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन से जुड़े तत्त्वों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्भव केवल एक कारण का परिणाम नहीं था, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा औपनिवेशिक परिस्थितियों की संयुक्त ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम था। कांग्रेस ने प्रारंभिक सीमाओं के बावजूद भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना, राष्ट्रीय एकता और संगठित राजनीतिक संघर्ष की भावना को विकसित किया तथा आगे चलकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया।

संदर्भ सूची

1. चंद्र, बिपिन, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, के. एन. पणिक्कर एवं सुचेता महाजन। *भारत का स्वतंत्रता संग्राम*। नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 1988, पृ. 1-35।
2. सरकार, सुमित। *आधुनिक भारत (1885-1947)*। नई दिल्ली: मैकमिलन इंडिया, 1983, पृ. 12-68।
3. मजूमदार, आर. सी. *भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास*, खंड-1। कोलकाता: फर्मा के.एल.एम., 1962, पृ. 1-52।
4. चंद्र, बिपिन। *आधुनिक भारत*। नई दिल्ली: एनसीईआरटी, 1971, पृ. 201-228।
5. देसाई, ए. आर. *भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि*। मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन, 1948, पृ. 245-284।
6. सील, अनिल। *भारतीय राष्ट्रवाद का उद्भव*। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1968, पृ. 120-160।
7. ग्रोवर, बी. एल. एवं ग्रोवर, एस. *आधुनिक भारत का नया अध्ययन*। नई दिल्ली: एस. चाँद, 2007, पृ. 315-348।
8. ताराचंद। *भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास*, खंड-1। नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1961, पृ. 50-92।
9. स्पीयर, पर्सिवल। *भारत का इतिहास, भाग-II*। लंदन: पेंगुइन बुक्स, 1978, पृ. 102-138।
10. चंद्र, बिपिन। *भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय और विकास*। नई दिल्ली: हर-आनंद पब्लिकेशन, 1966, पृ. 70-115।
11. मजूमदार, आर. सी. *ब्रिटिश प्रभुत्व और भारतीय पुनर्जागरण*। मुंबई: भारतीय विद्या भवन, 1965, पृ. 180-214।
12. बोस, सुगाता एवं आयशा जलाल। *आधुनिक दक्षिण एशिया: इतिहास, संस्कृति और राजनीतिक अर्थव्यवस्था*। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004, पृ. 88-126।
13. छाबड़ा, जी. एस. *आधुनिक भारत के इतिहास का उन्नत अध्ययन*। नई दिल्ली: लोटस प्रेस, 2005, पृ. 212-248।
14. दत्त, आर. सी. *भारत का आर्थिक इतिहास*। नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, पृ. 165-210।
15. मेहता, जे. एल। *आधुनिक भारत का इतिहास*। नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स, पृ. 145-192।
16. शर्मा, एल. पी. *आधुनिक भारत का इतिहास*। आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पृ. 210-252।
17. जैन, एम. एस. *आधुनिक भारत का इतिहास*। नई दिल्ली: मैकमिलन, पृ. 154-198।
18. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस। *भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यवाही: प्रथम अधिवेशन (1885)*। बंबई: कांग्रेस अभिलेखागार, पृ. 1-36।
19. भारत सरकार। *ब्रिटिश भारत में प्रशासनिक नीतियों एवं संवैधानिक सुधारों संबंधी प्रतिवेदन*। नई दिल्ली: सरकारी प्रकाशन विभाग, पृ. 45-98।
20. राय, लाला लाजपत। *यंग इंडिया*। नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग (पुनर्मुद्रित संस्करण), पृ. 95-125।